मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

अक्टूबर 2025

मूल्य 10.00 रुपए

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

शून्य से सेवा, समर्पण, समरसता, संस्कृति, संस्कार एवं सर्व-समाज जागरण से राष्ट्र-मंगल के 100 वर्ष ।

SHAKTI®
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है. शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

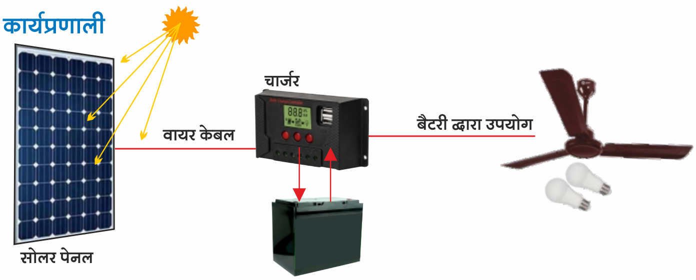

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्ते लागू

जाग्रत मालवा
मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : ०५ अंक : ०५
आश्विन शुक्ल १३
युगाब्द ५१२७

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
राकेश दाँगी
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
राजेश सोनी
अशोक वर्मा
योगेश भोपे
सौरभ मारु
अमन व्यास

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक राकेश दाँगी
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

हम सभी परम सौभाग्शाली हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के सहयोगी एवं प्रत्यक्षदर्शी बनेंगे। शताब्दी वर्ष के निमित्त होने वाले सभी कार्यकम हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायी होंगे।अपने मालवा प्रांत में भी प्रभावी कार्यक्रमों की योजना बनी है। सभी कार्यक्रम गाँव, नगर और बस्तियों में होंगे। हम सबके लिए संघ को जानने का पुनीत अवसर है। हमारा सौभाग्य है कि हमने पुण्यभूमि भारत और कर्मभूमि भारत में जन्म लिया है। हमारी संस्कृति दुनिया की श्रेष्ठतम संस्कृति है। यह हमारे लिये और संपूर्ण मानवता के लिए एक वरदान है। इसका रक्षण और पोषण करना हम सभी का धर्म है। इसी भाव को दृष्टिगत रखते हुए कार्यक्रमों की योजना बनी है।

हम सभी हिन्दू राष्ट्र के अभिन्न अंग हैं। इसलिए हम सबका दायित्व है कि सभी संगठित होकर एक आदर्श प्रस्तुत करें। हम सब की संगठित शक्ति ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है। इस संगठित शक्ति के कारण ही हमारी चिर पुरातन संस्कृति पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

शताब्दी वर्ष के इन कार्यक्रमों को पंच परिवर्तन नाम दिया गया है इसमें **कुटुंब प्रबोधन, समरसता, स्वदेशी जीवन शैली, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक अनुशासन,** इन विषयों को केन्द्र मानकर विभिन्न कार्यक्रम होंगे। इन कार्यक्रमों को सफल व प्रभावी बनाना हम सभी का पावन कर्तव्य है।

संघ की स्थापना क्यों हुई और किस प्रकार बाधाओं के बीच स्वयंसेवकों ने इसे आगे बढ़ाया और सौ वर्षों में हम कहाँ तक पहुँचे हैं और आगे अपना लक्ष्य क्या है इन सभी बातों पर इन कार्यक्रमों में चिन्तन-मनन होगा। भारत माता परम वैभव के शिखर पर पहुँचे, यही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का परम ध्येय है। हम सभी इस ध्येय को प्राप्त करने में सहयोगी बनें, यही निवेदन है।

मंगलमय शुभकामना, है सबकी सद्भावना।
सौ वर्षों से सतत चल रही, मातृभूमि की प्रार्थना।।
भारत माता की जय।

- देवकृष्ण व्यास

संघ स्थापना - पृष्ठभूमि, उद्देश्य

डॉ. सुब्रतो गुहा

प्रभु श्रीराम द्वारा त्रेतायुग में लंकापति दस सिरों वाले राक्षस रावण दशानन के वध की स्मृति में उसकी वर्षगांठ प्रतिवर्ष त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलयुग में मनाई जाती रही है। परन्तु सन् 1925 की 27 सितम्बर की तिथि केवल **विजयादशमी** की तिथि नहीं थी बल्कि विश्व इतिहास की एक हमेशा याद रहने वाली तिथि बन गई, क्योंकि उस दिन **महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा राष्ट्रवादी महापुरुष डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नामक सांस्कृतिक संगठन की आधारशिला रखी।** जिस संगठन का बीजारोपण परम पूजनीय डॉक्टरजी ने उस दिन किया वह सौ वर्ष बाद आज फल-फूलकर एक विशाल बरगद बनकर विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक संगठन के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है। न केवल भारत के प्रत्येक राज्य में **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** की गतिविधियाँ करोड़ों स्वयंसेवकों के माध्यम से संचालित हो रही हैं बल्कि साथ ही **विश्व के प्रत्येक महाद्वीप में फैले पचास देशों में हिन्दू स्वयंसेवक संघ के माध्यम से संघ की राष्ट्रवादी सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ संचालित हो रही हैं।**

इतिहास के पृष्ठों को पलटते हुए देखना आवश्यक है कि आखिर वह कौन सी स्थितियाँ, परिस्थितियाँ थीं जिनके फलस्वरूप **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** की स्थापना आवश्यक हो गई थी। चिकित्सक बनने हेतु कोलकाता के मेडिकल कॉलेज में नागपुर के युवक केशव बलिराम हेडगेवार ने प्रवेश लिया। राष्ट्रवादी व देशभक्ति के विचारों वाले युवा केशव ने मेडिकल की पढ़ाई के साथ-साथ मातृभूमि भारतवर्ष को विदेशी ब्रिटिश शासन से मुक्त करने हेतु बंगाल के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी संगठन **अनुशीलन समिति** की सदस्यता ग्रहण की एवं ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अनेक क्रान्तिकारी अभियानों में सक्रिय सहभागिता की। तत्पश्चात् वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े और 1920 के असहयोग आंदोलन के मुख्य नेतृत्वकर्ताओं में थे। परन्तु सन् 1921 में केरल के मालाबार प्रान्त में मोपला मुस्लिमों द्वारा खिलाफत आंदोलन की असफलता की खीझ मिटाने हेतु निर्दोष हिन्दुओं के विरुद्ध भीषण एकतरफा हिंसा में पन्द्रह हजार हिन्दू नारी-पुरुष- शिशुओं की निर्मम हत्या, पन्द्रह सौ हिन्दू युवतियों-महिलाओं से दुराचार तथा करोड़ों रूपए की हिन्दू संपत्तियों के विनाश के बाद भी तत्कालीन कांग्रेस नेतागण तुष्टीकरण नीति के कारण निन्दा के एक शब्द का उच्चारण करने की भी हिम्मत नहीं जुटा सके। यही स्थिति तत्कालीन मुस्लिम लीग के जिहादियों द्वारा भारत के विभिन्न प्रान्तों में निर्दोष हिन्दुओं के नरसंहार के समय भी देखी गई थी।

यह सब व्यथित मन से देखते हुए डॉ. हेडगेवार को लगा कि संख्या में अधिक होते हुए भी हिन्दू कम संख्या वाले मुस्लिमों की निर्मम हिंसा के शिकार हैं, क्योंकि वे जाति-भाषा-प्रान्त इत्यादि आधारों पर बंटकर शक्तिहीन हैं। **इसलिए विजयादशमी दिनांक 27 सितम्बर 1925 को डॉ. हेडगेवार ने एक महान राष्ट्रवादी सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन की आधारशिला रखी जिसका नाम था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ।** स्थापना के पीछे प्रमुख उद्देश्य था हिन्दू समाज के बिखरे तत्वों को समरसता के सूत्र में पिरोकर एक शक्तिशाली समरस हिन्दू समाज का निर्माण जो अपने ऊपर होने वाले आक्रमणों एवं अत्याचारों को पराजित कर तथा हिन्दू राष्ट्र भारतवर्ष की नींव मजबूत कर उसे परम वैभव के मार्ग पर ले जाते हुए **पुनः विश्वगुरू** के आसन पर स्थापित करे। परम पूज्य डॉ. हेडगेवार को विश्वास था कि भारत निकट भविष्य में अवश्य ब्रिटिश शासन तंत्र से स्वतंत्र होगा परन्तु स्वतंत्रता से पूर्व की दुर्दशा से हिन्दू समाज मुक्त हो तथा स्वतंत्र भारत में भी हिन्दू समाजजन स्वाभिमान एवं आत्म सम्मानपूर्वक जीवनयापन कर सके इसलिए **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** की स्थापना की प्रासंगिकता बनी।

विजयादशमी सन् 1925 से 5 जून 1940 को अपने देहावसान तक परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार संघ के प्रथम सरसंघ चालक के रूप में मार्गदर्शन करते रहे। तत्पश्चात् 1940 से 1973 तक परम पूज्य श्री गुरूजी, 1973 से 1994 तक परम पूज्य बालासाहब देवरस, 1994 से 2000 तक प्रो. राजेन्द्र सिंह उपाख्य रज्जू भैया, सन् 2000 से 2009 तक परम पूज्य सुदर्शनजी, तथा सन् 2009 से निरन्तर परम पूज्य मोहनराव जी भागवत सरसंघचालक का दायित्व निर्वहन करते हुए सनातन समाज का मार्गदर्शन करते रहे हैं। अतीत के समान ही वर्तमान और भविष्य में भारत देश तथा सनातन समाजजनों पर जब-जब अत्याचार या अन्याय होगा, तब-तब संघ की राष्ट्रवादी विचारधारा के पथ पर चलते हुए समरस शक्तिशाली सनातन समाज उनका प्रतिकार करते हुए निरन्त प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहेगा -

मानस भवन में आर्यजन, जिनकी उतारें आरती,
भगवान भारतवर्ष में, गूंजे हमारी भारती।

शताब्दी वर्ष: 88 वर्षीय स्वयंसेवक भगवानदासजी ने बताई कठिन समय की कहानी

संघ पर प्रतिबंध लगा तो ध्वज हटाकर दंड को प्रणाम कर लगाई शाखा

शाजापुर : इस वर्ष विजयादशमी पर संघ की स्थापना को सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस उपलक्ष्य में संघ द्वारा 2025 को शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। स्थापना दिवस विजयादशमी को ऐतिहासिक बनाने के लिए भी संघ द्वारा तैयारी की जा रही है। इस दिन नगर सहित जिले में कई स्थान पर पथ संचलन में हजारों स्वयंसेवक शामिल होंगे। संघ की सौ वर्ष की यात्रा में कई दौर कठिन भी रहे। तब स्वयंसेवकों ने विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए काम किया। आज जब संघ शताब्दी वर्ष का उत्सव मना रहा है तो ऐसे समय में संघ की जड़ों को मजबूत करने वाले स्वयंसेवकों में शामिल 88 वर्षीय **भगवानदास नागर** से चर्चा में उन्होंने संघ के कठिन दौर के किस्से सुनाए। बताया कि स्वयंसेवक के लिए सदैव राष्ट्र और संघ प्रथम रहता है।

नागर ने बताया कि वह वर्ष 1946 से करीब नौ वर्ष की आयु से ही संघ से जुड़ गये थे। वर्ष 1948 में संघ पर प्रतिबंध लगा तो शाखा लगाना मुश्किल हो गया। किंतु हिम्मत नहीं हारी, ध्वज लगा नहीं सकते थे। इसलिये दंड लगाकर ही शाखा का संचालन किया। उस समय शहर में तीन स्थानों पर शाखा लगती थी। कृष्णा टाकिज (वर्तमान में पोस्ट ऑफिस), धानमंडी और लालपुरा (वर्तमान में संघ कार्यालय)। नागर पर कृष्णा टाकिज पर शाखा संचालन का दायित्व था। यहां पास ही में पुलिस लाइन है। जिसके कारण प्रतिबंध के दौरान यहां शाखा लगाना चुनौतीपूर्ण था। पुलिस के डर से स्वयंसेवक शाखा में आने से बचते थे। युवा तो आते ही नहीं थे, बाल स्वयंसेवक ही आ पाते थे। बावजूद उन्होंने शाखा संचालन बंद नहीं होने दिया और स्वयंसेवक जुटाकर संचालन किया। चिमनलाल जैन, राजनारायण गौड़ व वीरचंद जैन (भंडावद) संघ में अधिकारी रहे। उन्होंने हमेशा संघ मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

शासकीय सेवा में भी मिली चुनौती - वर्ष 1958 में शिक्षा विभाग में शिक्षक के रुप में नौकरी लग गई। जिससे वे प्रत्यक्ष रूप से संघ में सहभागिता नहीं कर सके। किंतु विचारों से संघ समर्पित रहे। उस समय कांग्रेस का प्रभाव था। जिसके कारण नौकरी में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बार-बार तबादले हुए, कभी परिवार के साथ शाजापुर में नहीं रह सके। इतने के बावजूद उन्होंने शासकीय सेवा में लापरवाही नहीं की। नियमित विद्यालय में सेवा देते थे। शनिवार को विद्यालय काल पूरा होने के बाद 40 किमी की दूरी साइकिल से तय करके शाजापुर घर आते थे और सोमवार सुबह वापस चले जाते थे। उनका समाज कांग्रेसी विचारधारा का रहा, वे संघ से जुड़े तो कई समाजजन को उचित नहीं लगा। किंतु उनके समर्पण और प्रभाव को देखते हुए वह कुछ नहीं कर सके।

संघ का उत्कर्ष देखकर आनंद आता है - पुराने स्वयंसेवकों ने संघ का कठिन समय देखा है, आज संघ शताब्दी वर्ष मना रहा है। यह विश्व का सबसे बड़ा और अनुशासित संगठन है। संघ की यह गौरव यात्रा मन को आनंदित करती है। संघ हमेशा राष्ट्र, समाज और मानवता के लिए तत्पर रहता है। जब भी कोई विपत्ति आई संघ और स्वयंसेवक सदैव पहली पंक्ति में नजर आए हैं। संघ का यही काम उसके उत्कर्ष और गौरव यात्रा का माध्यम है।

संघ द्वारा समाज परिवर्तन

डा. रत्नदीप निगम

रतलाम। **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** विगत सौ वर्षों से समाज की सज्जन शक्ति को संगठित करने का निरंतर प्रयास कर रहा है। सज्जन शक्ति के जागरण से समाज में कैसे सकारात्मक परिवर्तन होते हैं उसका श्रेष्ठ उदाहरण है गणेशोत्सव की गणेश प्रतिमाओं से लेकर दीपावली के दीपक निर्माण की यात्रा। कुछ वर्षों पूर्व तक हमारे समाज के भीतर अपने पर्यावरण एवं स्वदेशी का भाव शून्य हो गया था उसके परिणामस्वरूप हमारे हिंदू पर्वों पर गणेश प्रतिमाएँ, दुर्गा जी की मूर्तियाँ विलायती प्लास्टर ऑफ पेरिस की बनने लगी थी, यहाँ तक कि दीपावली के दीपक, भवनों पर लगने वाले दर्शनीय बिजली के बल्ब, नकली फूलों की झालर चीन द्वारा आयात किये जा रहे थे और समाज इन चीनी सामानों का भरपूर उपयोग कर रहा था। इस पर्यावरण चेतना से शून्य और स्वदेशी भाव से विमुख समाज को जागृत करने का प्रयास **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** के स्वयंसेवकों द्वारा कुछ वर्षों से प्रारंभ किया।

उस समाज जागरण के प्रयास से जो परिणाम आया वह अद्भुत रहा। सर्वप्रथम समाज को गणेश प्रतिमाओं एवं दुर्गा जी की प्रतिमाओं के लिए प्रत्येक वर्ष सोशल मीडिया के माध्यम से घर- घर संपर्क करके, समाजों की छोटी-छोटी गोष्ठियों के माध्यम से, गणेश मंडल व नवरात्रि गरबा आयोजकों की बैठकें करके लगभग तीन - चार वर्षों तक समाज को प्लास्टर ऑफ पेरिस के पर्यावरणीय नुकसान और मिट्टी की मूर्तियों के लाभ से अवगत कराया गया धीरे - धीरे समाज में मिट्टी की मूर्तियों की माँग बढ़ने लगी तो मूर्तिकारों ने दुकानों में मिट्टी की मूर्तियों रखना प्रारंभ किया। आज बाजार की स्थिति यह हो गई है कि मिट्टी की मूर्तियाँ बनाने वालों की दुकानें 80 प्रतिशत हो गई और प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियों की दुकानें केवल 20 प्रतिशत रह गई।

यही स्थिति दीपावली के पर्व पर भी निर्मित होने लगी है, मिट्टी के भारतीय दीपक बिजली के बल्ब की झालरें हाथों हाथ बिकने लगी हैं और चीनी सामान बाजार से बाहर होता जा रहा है। **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** ने अपने सौ वर्षों की यात्रा में ऐसे ही कई अभियान एवं समाज जागरण के कार्यक्रम, चलाकर समाज की सहभागिता के साथ समाज परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

पहली फसल हमारी नहीं, गाँव देवता और पुरखों की है

निलेश कटारा(माध्यमिक शिक्षक)

नवाई एक जनजाति त्यौहार है। वर्तमान समय में जनजाति बहुल क्षेत्र झाबुआ, आलीराजपुर सहित अन्य जनजाति जिलों में नवाई का पर्व बड़े धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। नवाई का शाब्दिक अर्थ है नई फसल का पूजन

इसमें नई फसलों की निकली उपज का पूजन रीति-रिवाज से किया जाता है। नई फसल चवला, ककड़ी, भुट्टा, भादी, चावल का पूजन किया जाता है। सभी पूजन सामग्री व नई फसलों की निकली उपज से पकवान बनाकर कुलदेवी, चूल्हा, घट्टी, ऊखल व दरवाजे की दहलीज के साथ प्रकृति को भोग लगाया जाता है। इस दिन से नई फसलों का सेवन करना और घर के अंदर उपज लाकर बनाना शुरू किया जाता है। सभी गांव वाले मिलकर यह तय करते हैं कि नवाई कब मनानी है, और इस दौरान पारंपरिक नृत्य और गायन के साथ पूरी रात जागरण किया जाता है। जब तक नवाई नहीं होती है, तब तक बड़े-बुजुर्ग नई फसल का एक दाना भी नहीं खाते हैं, और नवाई के बाद ही नई उपज को घर में लाकर पकाया जाता है। नवाई में बनी खीर और अन्य पकवानों को कुलदेवी और प्रकृति को भोग लगाने के बाद प्रसाद के रूप में वितरित किया जाता है।

मां प्रकृति के प्रति अटूट आस्था होती है जनजाति समाज में - नवाई एक पर्व ही नहीं बल्कि अपनी दृढ़ आस्था और संकल्प का कठोर परिश्रम का उत्सव भी होता है। जनजाति समाज जब से अपना अनाज बोने का कार्य शुरू करता है उसी दिन से वह संकल्प लेता है मां प्रकृति और ईश्वर से कि आने वाले वर्ष में मेरी फसल का उत्पादन अच्छा हो तथा बड़ी मात्रा में फसल का उत्पादन हो इस संकल्प के साथ वह अनाज बोने का काम शुरू करता है। अनाज बोने के पूर्व बाबा गणेश के नाम से नारियल फोड़ कर बोने का काम शुरू करता है।

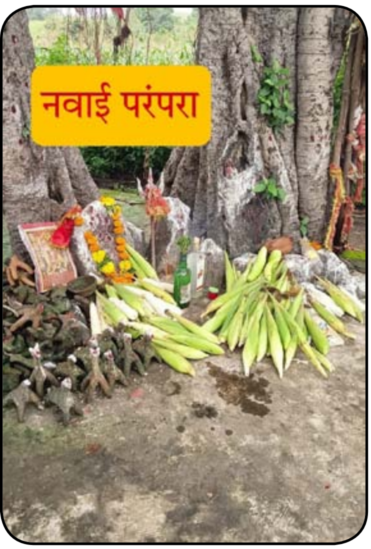

बाबी जातर व मांडला के बाद होती है नवाई - गांव के प्रमुख पटेल पुजारा बड़वा और वरिष्ठ गणमान्य नागरिक बंधु मिलकर गांव की सुख समृद्धि व शांति के लिए गांव की आराध्य देवी मां सावन माता के स्थल पर रात्रि में अपने पारंपरिक लोकगीत व भजनों के माध्यम से मां व देवी की आराधना की जाती है तथा अपने पुरखों की परंपरा के अनुसार देवी देवताओं व मां प्रकृति की वंदना की जाती है तथा गांव के दुख-दारिद्य को दूर करने के लिए सामूहिक गयनों व लोक गीतों के माध्यम से पुरखों की परंपरा के अनुसार चली आ रही रीति के अनुसार मांडला निकाला जाता है व देवी मां को भोग लगाया जाता है।

नई फसल का पहला चढ़ावा स्थानीय देवी देवताओं को - जनजाति समाज अपनी नई फसल का उत्पादन होने के बाद वह स्वयं ग्रहण करने से पहले अपने पारंपरिक व मूल परंपरा के अनुसार स्थानीय देवी देवताओं को चढ़ाने के बाद ही अपनी नई फसल को ग्रहण करता है। स्थानीय देवी देवता जैसे बाबा देव, भाभी माता, सावनमाता, लालबाई, फूलबाई, बाबो कहाजो, बाबो वगाजो, बाबो कसूमोर देव, बाबा कोकिंदा देव, तिटकी माता, बाबो हरहेल, खेड़ापति देव, भोला ईश्वर सहित स्थानीय सभी देवी देवताओं को चढ़ाता है। यह प्रकृति के प्रति आस्था सेमान और आभार प्रकट करने का आदिम और प्राचीन तरीका है। जनजाति समाज हमेशा प्रकृति और ईश्वर के निकट रहा है। वर्तमान समय में आदिवासी को ईश्वर और प्रकृति से अलग करने के लिए कई विधर्मी लगे हुए हैं। लेकिन जनजातियों की आस्था मां शबरी और राम की तरह है। वह कठिन परिश्रम करना जानता है और कठिन परिश्रम करता भी आया है। वह राम, शबरी, हनुमान और भगवान शिव को हमेशा अपना आराध्य मानता आया है। आदिवासी की पूजा पद्धति और हिंदुओं की पूजा पद्धति दोनों ही एक दूसरे से मिलती जुलती हैं।

मालवी है मिठास की बोली

अनिता जोशी

भारत की भाषाई विविधता में लोक भाषाएँ और बोलियाँ अपना विशेष स्थान रखती हैं। बोली केवल बोलचाल का माध्यम नहीं, बल्कि किसी समाज की पहचान, उसकी परंपराएँ, रिवाज, मूल्य और विश्वास की जीवंत अभिव्यक्ति होती हैं। यह किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरी जनता की सामूहिक संपदा होती हैं। इसी धरोहर में मालवी बोली का विशेष महत्व है। इस बोली में मालवा की मिट्टी की सौंधी महक और आत्मीय अपनापन झलकता है। यह मालवा की सांस्कृतिक पहचान और भावनात्मक धरोहर है। गाँव की चौपालों में आज भी मालवी गीतों की स्वर-लहरियाँ गूंजती हैं। मालवी भाषा को सहज और जीवंत बनाए रखने का कार्य कवि, लोकगायक और साहित्यकार लगातार करते आए हैं। राष्ट्रीय स्तर पर मालवी कविता को पहचान दिलाने का श्रेय सुप्रसिद्ध कवि बालकवि बैरागी जी को जाता है। उनकी प्रसिद्ध कविता पनिहारी में मालवी की मिठास सहज ही अनुभव की जा सकती है।

नवी उमरिया नवी डगरिया, नवा पिया की नवी प्यारी,
नवी नगरी में नवी गगरी ले पनघट जई री ओ पनिहारी...
झुके नजरिया दुखे कमरिया भरे अनोखी सिसकारी
नवी नगरी में नवी गगरी ले पनघट जई री ओ पनिहारी

इस कविता में गाँव की पनिहारी युवती की सहजता, सौंदर्य और कोमल भावनाएँ बड़ी सुंदरता से प्रकट हुई हैं।

आधुनिक मालवी कविता में नरहरि पटेल का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने मालवी में गीत, कविता और हाइकू लिखे, किंतु उनकी विशेष पहचान गीतकार और ग़ज़लकार के रूप में रही। उनकी रचनाओं में मालवी बोली की ठसक और मिठास का अनोखा संगम दिखाई देता है। उदाहरण स्वरूप -

छोटी-छोटी मच्छी कितरो पाणी कितरो पाणी ?
म्हे नी बतावां लावो गुड़-धानी लो गुड़-धानी
यो सरवर तीर किनारो हे बस घुटना-घुटना गारो हे
भई पाणी की बलिहारी जी।
झलमल हे प्यारो प्यारो हे, लो आओ बतावां इतरो पाणी

इन गीतों में लोक जीवन की सहजता और ग्रामीण परिवेश की झलक मिलती है। मालवी कविता के भीष्म पितामह कहे जाने वाले पंडित पन्नालाल शर्मा **नायब** का योगदान अविस्मरणीय है। उनकी रचना मास्टर जी की अनोखी छटा (1913, मुंबई से प्रकाशित) को मालवी का पहला प्रकाशन माना जाता है। वे स्वयं शिक्षक थे । भणजे मती बेटा अपणे मांगी खावांगा' जैसे जुमलों से उन्होंने साक्षरता के हक में व्यंग्य किया था। इसके बाद आनंदराव दुबे और भावसार बा ने 80 के दशक में मालवी कविता को नई ऊँचाइयाँ दीं। दुबे जी मालवी कहावतों और मुहावरों के धारदार प्रयोग से श्रोताओं को अपने अंचल की धरती से जोड़ने में सफल रहे। उनकी रचना रामाजी रई ग्या, नऽ रेल जाती री हास्य-व्यंग्य का सुंदर उदाहरण है। इस कविता में रामाजी अपनी पत्नी रंभा के साथ ससुराल जाते हैं। वहां सात दिन रुक जाते हैं और फिर याद आती है उन्हें काकीजी की बात कि गांव में ही मत पड़े रहना ससुराल की मनुहार चने के झाड़ पर मत चढ़ जाना और फिर रेल पकड़ने के चक्कर में हास्यास्पद स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। उदाहरण देखिए -

सांची मजाक नी है,
जई पड़्या जोर की, लागी लोगना नी हासे,
इना डर से रामजी नी रोया, पर बापड़ी रंभा रोती री...
रामजी रईग्या ने रेल जाती री... अतः कह सकते हैं

मालवी बोली की सबसे बड़ी शक्ति इसकी सहजता, आत्मीयता और हास्य-विनोद है। यह हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखती है। इसमें जीवन का आनंद, यही कारण है कि मालवी बोली न केवल मालवा की पहचान है, बल्कि भारतीय भाषाई विरासत का भी अनमोल रत्न है।

संघ - चरित्र निर्माण की पाठशाला

दुर्गेश कुमार साध

जो लोग संघ को नजदीक से नहीं जानते हैं, उन्हें प्रथमदृष्ट्या यह लगता है कि संघ की स्थापना मुस्लिम-विरोध के फलस्वरूप हुई, मगर यह एक अत्यंत ही संकुचित दृष्टि है। जो लोग संघ की शाखाओं में जाते हैं अथवा उसके कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, वे संघ के विचारों की शुचिता से प्रभावित न हों, ऐसा होना संभव नहीं है। अगर संघ की दृष्टि इतनी ही संकुचित होती, तो यह संगठन विश्व का सबसे बड़ा और उम्र-दराज संगठन कभी नहीं बन पाता। विश्व के विभिन्न संगठनों का अगर अध्ययन किया जाए, तो कोई भी संगठन इतने लम्बे समय तक अस्तित्व में नहीं रहा या विघटित हो गया। उसके पीछे कारण यह रहा है कि उनके ध्येय संकुचित और दृष्टि सीमित थी। उपरोक्त प्रश्न एक बार जब तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरुजी से पूछा गया था, तो उनका जवाब था कि **किसी के साथ संघर्ष करने अथवा संघर्ष का प्रतिकार करने के लिए संघ खड़ा नहीं हुआ। राष्ट्रीय-चारित्र्य का निर्माण करना संघ का प्रमुख कार्य है।** एक अन्य स्थान पर इसी प्रकार के प्रश्न का उत्तर उन्होंने यूँ दिया था -**अगर इस्लाम का अस्तित्व न भी होता तथा हिन्दुओं की दशा वर्तमान काल के समान असंगठित और आत्मविस्मृत होती, तो भी हम यह कार्य इसी प्रकार करते, जैसा कि आज कर रहे हैं।** इन बातों से स्पष्ट है कि संघ की सोच संकीर्ण न होकर कितनी व्यापक एवं विराट है।

आज जबकि संघ की स्थापना को 100 वर्ष पूर्ण होकर वह अपने **'शताब्दी वर्ष'** में प्रवेश कर रहा है, तो इस पर भी विचार किया जाना चाहिए कि जिस समय संघ का उद्भव हुआ, उस समय हिन्दुओं की परिस्थिति अत्यंत दीन और प्रतिकूल थी। हिन्दुओं में आत्मदैन्य का एक ऐसा वातावरण रच दिया गया था, जिससे एक पूरी की पूरी पीढ़ी से उनका स्वाभिमान तक छीन लिया गया था, मगर संघ अपने लक्ष्य पर अडिग रहकर मौन रूप से कर्तव्य-पथ पर चलता रहा, इसलिए आज समाज में इसकी इतनी अधिक व्याप्ति हो चुकी है। एक समय प्रचार-प्रसार से दूरी बनाकर रखने वाला संघ अब अपने विचारों को, अपने कार्यों को अपनी चिर-परिचित अनुशासनात्मक शैली द्वारा समाज में ले जाने के लिए अनेक कार्यक्रम चला रहा है। संघ अब बिना किसी शोर-शराबे या आकर्षक दिखावट के समाज के मध्य जाता है, क्योंकि संघ की स्पष्ट मान्यता है कि समाज में हमारी स्वीकृति तभी हो सकती है, जब हमारी नीयत साफ हो और हमारा कार्य प्रामाणिक हो।

संघ पर झूठे आरोप लगाने एवं दुष्प्रचार किए जाने के भी लम्बे इतिहास रहे हैं। कभी इसे सांप्रदायिक करार दिया गया, तो कभी कट्टर। मगर संघ हर बार इस अग्निपरीक्षा में कुंदन की तरह तपकर और अधिक प्रखरता से खड़ा हुआ है। बात चाहे महात्मा गाँधी की हत्या के बाद लगे प्रतिबंध की हो अथवा इमर्जेंसी के दौरान स्वयंसेवकों पर हुए अत्याचार की, संघ ने प्रत्येक बार अपने अनुशासन का दामन नहीं छोड़ा एवं हिन्दुओं से जिस प्रकार के आचरण की उम्मीद होनी चाहिए, उसी प्रकार का उदाहरण प्रस्तुत हुआ। संघ की स्पष्ट मान्यता है कि जो आज हमारे विरोधी हैं, हमारे कार्यों के द्वारा उनका भी एक न एक दिन हृदय परिवर्तन निश्चित है, क्योंकि सत्य को कितना भी दबाया जाए, वह निकलकर बाहर आता ही है, इसलिए संघ के कार्यक्रमों में विरोधी विचारधारा के लोगों को बुलाकर भी उनसे संवाद स्थापित करने की एक लम्बी परम्परा रही है।

इस शताब्दी वर्ष में संघ जिस 5 सूत्रीय कार्यक्रम को लेकर समाज में जा रहा है, उसमें - सामाजिक समरसता, नागरिक कर्तव्य, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण और स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता हैं। इन कार्यक्रमों के द्वारा समाज का जागरण होगा, हिन्दू अधिक सशक्त, स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर बनेगा, ऐसी आशा ही नहीं, वरन् विश्वास है।

हमारी बातचीत

प्रिय पाठकों ,

अगले माह से आपकी अपनी पत्रिका जागृत मालवा में एक नया स्तम्भ हमारी बातचीत प्रकाशित होगा। इस स्तम्भ में आपके सुझाव और मन की बात प्रकाशित करेंगे। आप अपने सुझाव, मालवा-निमाड़ से जुड़ी बातें और समसामयिक विषयों पर अपनी बात व्हाट्सएप, ई-मेल या पत्र के माध्यम से भेज सकते है। आप पत्रिका के लिए सुझाव और अपने मौलिक विचार भी लिख कर भेज सकते हैं, जिनकी सहायता से हम जागृत मालवा को और अधिक अपनी बना सकेंगे।

आपके चयनित पत्रों को हम इस स्तम्भ में प्रकाशित भी करेंगे।

व्हाट्सएप - ९९७७७१२५६१
ईमेल - jagrutmalwa@gmail.com
पता -विश्व संवाद केन्द्र, अर्चना, 76 रामबाग, इन्दौर

समय है स्वावलम्बन का

सनी राजपूत

इस संकट के समय में प्रत्येक व्यक्ति कठिनाइयों का सामना करने के लिए विवश है। परन्तु कठिनाई के इस दौर में भी सामान्य व्यक्ति की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो रही है और उन्हीं में एक है भोजन। किसी ना किसी प्रकार भोजन सभी तक पहुंच रहा है और यह इसी कारण हो रहा है क्योंकि हमें अन्न सहित जितने भी कृषि उत्पाद हैं उनके लिए किसी अन्य देश पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। इसी को स्वावलंबन कहा जाता है। भारत मे यह अधिक आवश्यक हो जाता है क्योंकि जनसंख्या की दृष्टि से भारत इतना विशाल है कि किसी अन्य देश पर निर्भर रहना हमारी सुरक्षा के लिए घातक है।

वर्तमान मे संपूर्ण विश्व शून्य पर स्थित है अर्थात् विश्व के सभी देशों को पुनः अपनी योजनाओं पर विचार कर उचित प्रयास करने होंगे। हमारे पास भी यह एक स्वर्णिम अवसर आया है कि हम हर क्षेत्र में स्वयं अग्रणी बन सकते हैं। स्वावलंबी बनने में सबसे अधिक सहायता होगी जब हम स्वदेशी की ओर आगे बढ़ेगें अर्थात् भारत मे ही जिन वस्तुओं का निर्माण किया जाता है हम उन्हीं का प्रयोग करेंगे। स्वदेशी का तात्पर्य यह भी नहीं है कि किसी बड़ी भारतीय कंपनी की ही वस्तुओं का उपयोग किया जाए। स्वदेशी का तात्पर्य है कि हम हमारे दैनिक उपयोग से संबंधित वस्तुओं को अपने ही आस-पास के लघु उद्योग या गृह उद्योग या स्वसहायता समूह या सहकारी संस्था और इन जैसे जितने भी संस्था या उद्योग जो आपके आस-पास स्थित हैं उनसे संपर्क कर उनका उपयोग किया जा सकता है। मोबाइल, टी.वी. कंप्यूटर, रेफ्रिजरेटर, पंखे, बल्ब, ट्यूबलाइट, मोटर और जितनी भी इस प्रकार की वस्तुएं हैं यदि इनका निर्माण हमारे देश ही किया जा रहा है तो हमें उन्हें प्राथमिकता देनी चाहिए न कि उन्हें जो केवल आयात किये जाते हैं। जब हम अपने घर के आस-पास के बंधु-बांधवों, संस्थान आदि से संपर्क स्थापित कर वस्तुओं का क्रय-विक्रय करेंगे तो हम स्वावलंबन की ओर तेजी से बढ़ेंगे तथा हमें किसी अन्य देश की ओर देखने की आवश्यकता नहीं होगी। हमारे पास एक छोटी सी पिन से लेकर अंतरिक्ष में जाने वाले यान का निर्माण करने की सामर्थ्य है। हमें केवल उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है। समय के साथ हमें स्वदेशी को अपनाकर स्वावलंबी बनना है, आने वाले समय में यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

रसोईघर हो स्वदेशी वस्तुओं से पूर्ण - **वोकल फॉर लोकल** या **लोकल हेतु वोकल** या स्वदेशी या भारतीय वस्तुएं, इनमें से जो शब्द या वाक्य उचित हो उसका प्रयोग कर हम उन वस्तुओं का उपयोग सर्वप्रथम अपने घरों के रसोईघर तक में करें। कहने का तात्पर्य यह है कि सबसे पहले हमारा रसोईघर स्वदेशी वस्तुओं से पूर्ण हो, क्योंकि रसोईघर हमारे घर रूपी मशीन का इंजन होता है। यदि इंजन व्यवस्थित रहता है तो मशीन ज्यादा समय तक लगातार काम करती है और उसके उत्पाद के रूप में घर के रहने वाले लोग शुद्धता के प्रतीक हो जाते हैं। एक अच्छे उत्पाद के लिए मशीन का सुचारु होना आवश्यक है और उसके लिए इंजन का ठीक रहना अधिक आवश्यक होता है। अब रसोईघर की व्यवस्था की बात आती है कि कैसे हम उसे स्वदेशी पूर्ण कर सकते हैं, तो सबसे पहले हमारे घरों में जो भी व्यक्ति रसोईघर में कुछ पकाने के लिए जाता है, उसके विचार स्वदेशी होने चाहिए ताकि वह भोजन भी उसी प्रकार बना सके। रसोईघर में बनने वाले अधिक से अधिक भारतीय परंपरा से प्रेरित व्यंजन हों क्योंकि उन व्यंजनों मे जो तेल, घी, मसाले, सब्जियां, खाद्य सामग्री आदि प्रयोग होते हैं वे सरलता से उपलब्ध होते हैं। रसोईघर में उपयोग होने वाले मसाले हम अपने आस-पास लगने वाले साप्ताहिक हाट में जाकर खरीद सकते हैं या पास ही जो मसाले आदि के व्यापार में संलग्न हैं उनसे संपर्क कर ले सकते हैं या भारतीय कंपनियों के द्वारा पैकिंग किए हुए मसाले भी ले सकते हैं। सब्जियां आदि सब सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं, दूध आदि भी स्वदेशी हो खासकर पैक किया हुआ दूध स्वदेशी कंपनी का हो तो बढ़िया रहेगा। यह तो खाने-पीने की वस्तुओं की बात है, अब आते हैं बर्तन आदि यंत्रों पर तो रसोई में उपयोग होने वाले बर्तन भी भारतीय केपनियों द्वारा निर्मित ही उपयोग करें, गैस चूल्हा, मिक्सर-ज्यूसर, रेफ्रिजरेटर, माइक्रोवेव ओवन, वाटर प्यूरीफायर, रोटी का तवा, नॉनस्टिक बर्तन, यहां तक कि रसोईघर में लगने वाली सीमेंट, टाइल्स, चिमनी, लकड़ी, फर्नीचर सभी कुछ जो रसोईघर को बनाते हैं सभी में हम स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करें। क्योंकि रसोईघर हमारे घर का ऊर्जा स्रोत है और उसका सुदृढ़ होना आवश्यक है। अब रसोईघर के विषय में इतनी बातों से आपको भी ध्यान आ रहा होगा कि एक छोटी-सी जगह में कितनी व्यवस्था करनी होती है। हमें ज्ञात हो रहा है कि हमारे जीवन में स्वदेशी का महत्व

कितना व्यापक है। हम विचार करें कि हम अपनी दिनचर्या में किस प्रकार स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को बढ़ावा दे सकते हैं।

श्रृंगार की पेटी हो स्वदेशी सामग्री से परिपूर्ण- इसके पहले हमने देखा था कि कैसे हम अपने रसोईघर को स्वदेशी वस्तुओं से परिपूर्ण कर सकते हैं, अब हम श्रृंगार की वस्तुओं के संबंध में पुरुष एवं महिला दोनों की बात करेंगे और मुख्यतः महिलाएँ किस प्रकार स्वयं की श्रृंगार की पेटी तथा सौन्दर्य प्रसाधनों को स्वदेशी वस्तुओं से परिपूर्ण कर सकती हैं।

श्रृंगार मुख्यतः महिलाओं का अधिकार है किन्तु समय के साथ पुरुषों को भी श्रृंगार आदि की आवश्यकता होने लगी है, महिलाओं की अपेक्षा पुरुष सौंदर्य प्रसाधनों की मात्रा कम ही होती है। श्रृंगार सामग्री को एक निश्चित सीमा में बाँधना भी उचित नहीं है, यहाँ केवल मुख्य उपयोगी वस्तुओं तथा सामग्रियों की चर्चा की गयी है। जिससे कि उपयोगकर्ता को संकेत मात्र किया जा सके कि जिस प्रकार रसोईघर में स्वदेशी वस्तुओं की अपार सम्भावना है उसी प्रकार श्रृंगार सामग्री में भी है। (भाषा की सरलता के लिए प्रचलित शब्दों का उपयोग किया जा रहा है।)

श्रृंगार की वस्तुओं में सर्वप्रथम स्नानागार में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं में जो दंतमंजन, साबुन, बालों के शैंपू, जेल, फेस-वाश आदि, पुरुषों की शेविंग किट में शेविंग क्रीम, ब्लेड, ब्रश, इरेजर आदि वस्तुएं स्वदेशी अर्थात् भारत में निर्मित या भारतीय कंपनी द्वारा निर्मित हों, उन्हीं का उपयोग करें।

स्नान आदि के पश्चात् उपयोगी वस्तुएं (यहाँ से श्रृंगार की मूल सामग्री प्रारंभ होती है।) बालों के तेल, चेहरे की क्रीम, टेल्कम पाउडर, मोइश्चराइजिंग क्रीम आदि। महिलाओं के उपयोग में आने वाली वस्तुओं में मांग का सिंदूर, माथे की बिंदी, आंखों का काजल, आई लाइनर, पलकों के शेड्स, फाउंडेशन क्रीम, नाक की नथनी, लिपस्टिक, नेल पॉलिश आदि व अन्य सौन्दर्य प्रसाधन जिन्हें नित्य उपयोग किया जाता है, ऐसी सभी वस्तुएं स्वदेशी हों तथा केमिकल प्रसाधनों के स्थान पर आयुर्वेदिक प्रसाधनों का उपयोग करने का प्रयास हो।

स्वदेशी वस्तुओं से परिपूर्ण श्रृंगार की पेटी के उपयोग पर हमें गर्व के साथ एक संतुष्टि भी रहेगी कि हमारे द्वारा दी गयी कीमत हमारे देश में तथा हमारे हितों में ही उपयोग की जाएगी। स्वदेशी के उपयोग के लिए हमें बाहर कुछ ढूँढने की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल यह ध्यान रखना है कि घरों मे उपयोग होने वाली छोटी-छोटी वस्तुएं मूल भारयीय वस्तुएं हों। स्वदेशी के प्रति विश्वास ही हमें श्रेष्ठता की ओर लेकर जाने वाला है।

शताब्दी गीत

मंगलमय शुभकामना, सबकी है सद्भावना
सौ वर्षों से सतत चल रही, मातृभूमि की प्रार्थना

दसों दिशा में जाएँगे, शुभ संदेश सुनाएंगे
पंच परिवर्तन को लेकर, सारा देश जगाएंगे
छूटेगा कोई गाँव ना, और रुकेंगे पाँव ना
सौ वर्षों से सतत चल रही, मातृभूमि की प्रार्थना ...2

जाति-पंथ मे बँटें नहीं, जुड़ जाएँ हम घटें नहीं
हिन्दू है पहचान हमारी, अपनी जड़ से कटें नहीं
उजड़ जाए यह बाग ना, माली बनकर जागना
सौ वर्षों से सतत चल रही, मातृभूमि की प्रार्थना ...3

सोया स्वाभिमान जगे, धरती का भगवान जगे
शस्त्र और शास्त्र ले कर में, सारा हिन्दुस्तान जगे
सफल हो रही साधना, माता की आराधना
सौ वर्षों से सतत चल रही, मातृभूमि की प्रार्थना...4

घड़ियाँ मंगलमय होंगी, विजय-विजय-विजय होगी
गूंज उठेंगी दसों दिशाएँ, भारत माँ की जय होगी
समरसता सद्भावना, है पावन प्रस्तावना
सौ वर्षों से सतत चल रही, मातृभूमि की प्रार्थना।।

- देवकृष्ण व्यास

निकिता-वैदेही का दीपावली

दीपावली की छुट्टियाँ लगने वाली है, बच्चे बहुत प्रसन्न हैं। अब कल से छुट्टियाँ लगेंगी, एक सप्ताह बाद विद्यालय आवेंगे। विद्यालय के मैदान के एक छोर पर वैदेही और निकिता अपनी पिछली दीपावली को याद करते हुए बातें करने लगी।

''मुझे तो दीपावली की छुट्टी का मतलब ही समझ नहीं आया।'' ऐसा कहते हुए निकिता मैदान में बैठ गयी।

वैदेही को बड़ा आश्चर्य हुआ और बोली ''ये हमारा बहुत बड़ा त्यौहार है। तुमने दीपावली पर क्या किया पिछले साल।''

निकिता ''कुछ नही ! पूणे के पास एक रिसोर्ट में ही रहे। घर तो चारों लोग एक दिन पूणे रूके, वहाँ मॉल में गये। अब ले दिन रिसोर्ट में चले गये।''

वैदेही ने पूछा ''दीपावली पर वहाँ क्या किया?''

''छुट्टियाँ इन्जॉय की। खाना और भाई के साथ खेलना।''

''हाँ, रिसोर्ट में दीपक भी लगाये थे। तुमने क्या पिछली दीपावली पर।'' निकिता ने पूछा।

वैदेही बोलने लगी ''घर की सफ़ाई तो दशहरे के पहले से शुरू हो गयी थी। फिर भी घर में भगवान की पूजा वाले मंदिर की सफ़ाई करके, मंदिर और आँगन में माँडने माँड़े। माँ ने दीपक छुट्टियों से पहले ही हाट से ख़रीद लिये थे।''

''पिताजी के साथ बाजार गयी, वहाँ से धानी, लक्ष्मीजी का चित्र, वंदनवार और झाड़ू खरीद कर लाये। लौटते समय रास्ते में पटाखों की दूकान से कुछ पटाखे भी खरीदे।''

''घर पहुँचे तो वहाँ माँ रसोई मे बहुत-सी मिठाइयाँ बना रही थी। नमकीन चिवड़ा, शक्करपारे, गुजिया, अनारसा और बेसनचक्की बन कर तैयार हो चुकी थी, परंतु अभी खा नहीं सकते थे। दीपावली की पूजा के बाद ही ये सब खावेंगे।''

''अगले दिन दीपावली को सुबह से ही पूरे घर की एक बार और सफाई की, रंगोली बनाई। आज बाजार से सीताफल, गन्ना और सिंघाड़ा लाये, साथ ही कलम और डायरी भी।''

पूजा का मुहूर्त छः बजे से था, सभी ने सुबह से नये कपड़े पहने थे, फिर भी शाम को दूसरे नये कपड़े पहने। सभी ने साथ में पूजा की, घर पर अन्दर-बाहर सभी जगह दीपक लगाये। मेरे विद्यालय के बस्ते और साइकिल की भी पूजा की। दादा-दादी और माँ-पिताजी से आशीर्वाद लिया। ''भोग लगा कर, सभी ने साथ में भोजन किया, मैंने मिठाई ज्यादा खायी। कुछ देर आतिशबाजी की... भैय्या और मैं दादी से दीपावली, धनतेरस, रूपचौदस, गोवर्धन पूजा और भाईदूज की कहानियाँ सुन रहे थे। मुझे कब नींद लग गयी पता ही नही चला।''

वैदेही ये बता ही रही थी कि विद्यालय की घंटी बज गयी, निकिता ऐसी दीपावली के बारे सोचते हुए धीरे-धीरे कक्षा की ओर बढ़ते लगी।

दिवाली की राम राम

तम कयके गया था में अई रियो हूँ दिवाली पे
तू दीवा तैयार राखजे खिली गया हजार फूलड़ा
ने गाल पे लाली अई गय।
मन माय री पीर झणकार सरखी उछरे
छट दोड़ी ने ओटले मांडी अई मांडना।
बारणा पे बांध्या वंदनवार मन धबकारो खाय
काळजो अकलाय मंगल कलस धरयो
दीवा लगय दीदा।
जगमग करे दीवला तमारी वाट देखी रिया
तम घरे अई जावो मनवार जरीसी मनवार हे।

तेवार घणी उमंग लावे कितरा वरस वितया
साते दिवाली नी मनई।
हरेक तेवार नी हरेक दन तमारी आस लगई।
गली गली ने घरे घर या खुसी बांटी अई।
तम घरे अय रिया हो तम दिवाली पे घरे अई रिया हो।

खुसी को गेणो म्हे पेरियो हे पण म्हने मालम हे
म्हारे सबसे योज केणो पड़ेगा
उनके घर आवा की घणी आस थी
वी तो तेवार पे घरे अय ज रिया था।
घर आवा की भावना थी जाणू म्हारा धबकारा
ने तमारा डब-डब नैण कय देगा म्हारे देस पेला
मूं भी जाणू सायबा म्हारो म्हार से पेला देस को पेरेदार हे।
देस वाते जीवणो जग-मग नत दन दिवाली को तेवार हे।
नत दन दिवाली को तेवार हे।।

माया मालवेंद्र बदेका (नारायणी माया), उज्जैन

भारत का भाव

उज्जैन से बड़नगर जाते समय विक्रमपुर गाँव में रूकना हुआ। वहाँ कुछ संघ के कार्यकर्ता मिलने आये और मिठाई का डिब्बा खोलकर हम सभी को मावे के पेड़े खिलाए। पेड़े बहुत स्वादिष्ट थे, मैंने सहज ही पूछा कि कहाँ उज्जैन से लाए हो? बहुत ही स्वादिष्ट हैं। तुरंत जवाब मिला "नहीं नहीं भाईसाहब, हमारे गांव के हैं ये पेड़े! हमारे गाँव के भेरूलाल जी आर्य पिछले 20 वर्षों से गाँव से शुद्ध दूध खरीदते हैं और घर में ही मावा बनाकर पेड़े बनाते हैं और बहुत कम कीमत पर बेचते हैं, मात्र 250 रुपए प्रति किलो।"

बताते बताते उनकी आँखों में चमक उठी और कहने लगे 'भाईसाहब अपने भेरूलाल जी का गजब का चरित्र है। कोविड के बाद थोड़ा दूध महँगा हुआ था, तो उनको लगा शायद पेड़े 250 रुपए किलो बेचेंगे तो घाटा पड़ेगा। ऐसा सोचकर उन्होंने पेड़े का भाव 300 रुपए कर दिया था। दस दिनों तक इसी भाव में बेचा भी और 10 दिनों बाद रुपयों का हिसाब लगाया, तो उन्हें लगा कि ये तो अपनी आवश्यकता से अधिक आय हो गई। रात भर सोचते रहे और स्वयं को कोसते रहे कि अपने समाज से अधिक धन लेकर आखिर क्या करूंगा! ये तो ठीक नहीं है और सुबह निर्णय कर लिया, पेड़े फिर से 250 रुपए किलो। फिर ध्यान आया कि पिछले दस दिनों तक जिनको अधिक दाम में पेड़े बेचे उनका क्या ? और सुबह वो निकल पड़े गाँव में प्रति किलो के हिसाब से 50 रुपए वापस लौटाने..

'भैया आपने परसों एक किलो पेड़े लिए थे। मैंने आपसे 50 रुपए ज्यादा ले लिए थे, ये 50 रुपए वापस लो या 50 रुपए के पेड़े ले लो।" सचमुच भारत गाँवों में बसता है और भेरूलाल जी जैसे लोग ही भारत को हृदय में धारण करके जीते हैं।

संस्मरण : श्री विनय दीक्षित

एक गीत

ऐसा बाग लगाओ माली, खुशबू बहे जमाने में।
लूट सके सो जी भर लूटे कमी न पड़े खजाने में।।

उड़ें तितलियाँ रंग बिरंगी,चिड़े चिड़ी डालों पर खेलें।
मदमाते मधुकर कुछ गायें,पेड़ों से लिपटीं हों बेलें।।

मद्धिम-मद्धिम चलें बयारें,मस्ती की झर उठें फुहारें,
कोई कसर न रहे प्रेम की, परिभाषा बतलाने में।।
ऐसा बाग------------।।1।।

थके पखेरू भली नींद लें,सुबह मिले कलरव सुनने को।
थिरक उठे संगीत प्रीति का,गीत चलें सपने चुनने को।।

महक उठे धरती का कण-कण,
बीते मदिर राग में क्षण-क्षण,
पत्ती-पत्ती खुली हवा में, लग जाए इतराने में।।
ऐसा बाग------------।।2।।

कलियों को खिल जाने देना, फूलों को मुस्काने देना।
जो भी आना चाहे साथी, खोलो फाटक आने देना।।

चौकीदारों से कह देना,सबके कोप तलक सह लेना,
कोई रोक-टोक मत करना, मौसम लगे रिझाने में।।
ऐसा बाग------------।।3।।

लिए हवा सन्देशा आए,कोयल पाती खोल सुनाए।
रसमय वाणी में आमन्त्रण,देकर रति बोले बतियाये।।

तन के साथ 'प्राण'अभ्यागत,
करते हुए मिलेंगे स्वागत,
लो सुगन्ध का नेह निमन्त्रण, मालिन लगे बुलाने में।।
ऐसा बाग------------।।4।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'

टैरिफ: अमेरिकी नीति का खुलासा

संजय बजाज, अर्थशास्त्री, न्यू दिगम्बर पब्लिक स्कूल, इंदौर

टैरिफ व्यापारिक समझौते के माध्यम से किसी देश की आयातित वस्तु पर लगाए जाने वाला टैक्स है। व्यापारिक समझौते के आधार पर अमेरिका भारत से 10% टैरिफ लेता था, भारत की बढ़ती हुई साख के कारण अमेरिका ने भारतीय वस्तुओं पर 25% टैरिफ लगाया और भारत द्वारा रूस से तेल की निरंतर खरीद के कारण अतिरिक्त 25% जुर्माना लगाते हुए 50% का टैरिफ लगाया।

अमेरिकी टैरिफ का तत्काल प्रभाव चुनौतीपूर्ण है, जिसमें वस्तुओं की कीमतों में दोहरी वृद्धि, रोजगार खोने का डर, संसाधनों के उत्पादन में कमी, ऐसे भयंकर कारण भारत के सामने उपस्थित हो रहे थे लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता के परिणामस्वरूप सुधार के कई प्रयत्न हमने पूर्व से ही आरंभ कर दिए थे। विश्व के अनेक देशों के साथ हमारी भागीदारी, बदलती व्यापार की गतिशीलता के अनुकूल होना, विकास को बनाए रखना, मेड इन इंडिया पर जोर, साथ ही स्वदेशी के भाव को जागृत करना, ऐसे प्रयास अमेरिका को भूमि पर लाने के लिए पर्याप्त हैं। चीन, रूस और भारत का परस्पर अमेरिकी नीति के विरोध में एकजुट होना भी अमेरिका में भय उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त है। यह प्रयास अमेरिकी टैरिफ नीति के दुष्प्रभाव को काम करेगा।

देश की वर्तमान जरूरतों और भविष्य के सपनों को देखते हुए जीएसटी के ये नए सुधार लागू हो रहे हैं। अब सिर्फ 5% और 18% की ही टैक्स दरें रहेंगी। रोजमर्रा के इस्तेमाल की ज्यादातर चीजें और ज्यादा सस्ती हो जाएँगी।

हमने अमेरिका की टैरिफ नीति का प्रत्यक्ष विरोध कभी नहीं किया, अमेरिका भी प्रत्यक्ष रूप से भारत से विवाद करने से बच रहा है। कूटनीति के अनुसार टैरिफ में छूट और कटौती के लिए अमेरिका के साथ लगातार बातचीत का दौर चल रहा है। दोनों देश रणनीतिक साझेदारी पर जोर दे रहे हैं। टैरिफ नीति के तोड़ के रूप में एक ऐतिहासिक जीएसटी सुधार 3 सितंबर 2025 को जीएसटी परिषद ने भारत में व्यापक कर सुधार हेतु प्रस्तुत किया। पहले जीएसटी चार स्तरों में लागू था 5%, 12% ,18% और 28% परंतु अब यह तीन स्तरों में लागू किया गया है। पहले 5% की दर आवश्यक व प्राथमिकता वाली वस्तुओं पर, दूसरी 18% की दर अधिकांश वस्तुओं पर व तीसरी 40% की दर तंबाकू आदि विलासिता की वस्तुओं एवं उच्चस्तरीय वस्तुओं पर लगाया गया

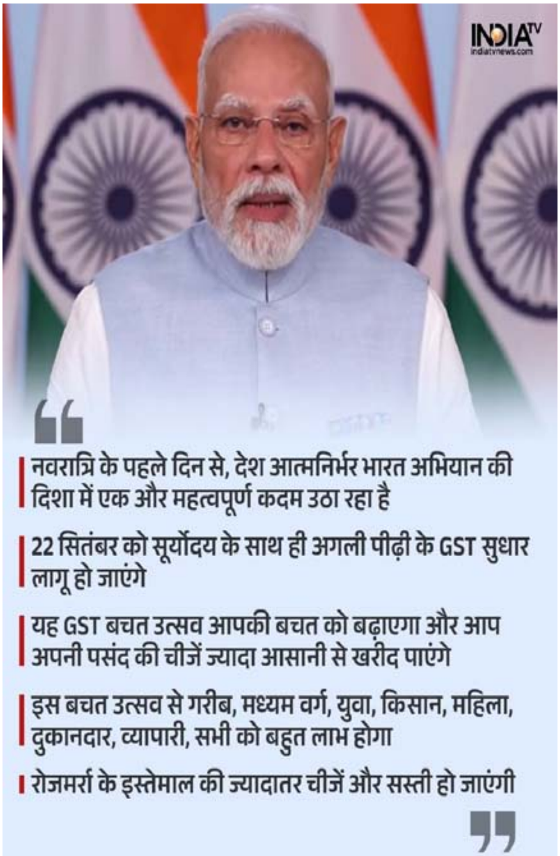

है। इन सुधारे हुए करों को 22 सितंबर 2025 को लागू कर दिया गया, जिसका उद्देश्य कराधान को अधिक स्पष्ट, निष्पक्ष और पालन करने में आसान बनाना है। सरल शब्दों में कहें तो जीएसटी से घरेलू सामानों का प्रयोग अधिक होगा जिससे भारत का रुपया भारत में ही रहेगा और स्वदेशी वस्तुओं के निर्माता को बल मिलेगा। सरकार को कम लाभ है किंतु इससे जनता को राहत मिल सकती है।

टैरिफ व जीएसटी इन दो अलग-अलग करों से समझ आया कि भारत बदल चुका है। भारत ने अमेरिका को समझा दिया है कि हम किसी के दबाव में कार्य नहीं करते, न ही अपना निर्णय बदलते हैं। यहाँ भारत की सूझ-बूझ की शक्ति के दर्शन होते हैं। अत्यधिक दबाव व संकट की इस घड़ी में स्थिर होकर देशहित में निर्णय लेना ही मुख्य ध्येय है। इस सरकार ने यह तो स्पष्ट कर दिया कि भारत के हित में जो निर्णय लेना होंगे, वे लेंगे। अब हमारा भारत स्वदेशी की ओर बढ़ता हुआ **सशक्त भारत, समर्थ भारत** का संदेश दे रहा है।

अपने भीतर का दीप जलाएँ...!

✒ अमित राव पवार, देवास (म.प्र.)

जनमानस में एक कहावत है,वर्षभर भारत देश मे नितनये 365 दिन ही कोई न कोई पर्व, त्यौहार, उत्सव, व्रत मनाया जाता है। भारतीय लोगों व त्यौहारों का एक अटूट रिश्ता सदियों से चला आ रहा और ये सभी उत्सव समाज पर अपना गहरा और अमिट प्रभाव रखते तथा हर पर्व यहां अपनी विशेषता व विशिष्टता के साथ बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता एवं इन सभी उत्सव के पीछे एक समृद्ध इतिहास, वैज्ञानिकता,आपस मे जुड़ने के परस्पर स्नेह,पर्यावरण का संदेश भी छिपा होता है। इन्हीं में एक महत्वपूर्ण **हिन्दू पर्व दीपावली** का है। इस पर्व को मनाए जाने के अनेक प्रमाण हमारे ग्रंथो में मिलते तथा पांच दिनों के इस उत्सव में हर दिन का अपना एक अलग-अलग महत्व है। यह सत्य है, कि कोई भी अंधकार को थामकर चलना नहीं चाहता मानव ने सदैव प्रकाश को ही चुना। प्रत्येक मनुष्य के अंदर एक दीप की लौ जलती रहती है, ज्ञान पर जब भी अज्ञान का अंधकार छा जाता है, उसे सही ज्ञान के प्रकाश से ही दूर किया जा सकता है, अंधकार रूपी दुराचारी प्रवृत्ति जब हमारे मार्ग में बाधा उत्पन्न करती तो चारों तरफ का वातावरण अंधकारमयी हो जाता और लाख कोशिश के बावजूद उसके प्रयास कभी सफल नहीं होते आज्ञानता छाई परत को ज्ञान के प्रकाश से ही प्रवज्जलित करना संभव है। आत्म साक्षात्कार के इस त्यौहार पर अंदर की ऊर्जा को जाग्रत करना होगा और यह तभी संभव है, जब हम सत्य ज्ञान के भंडार को अपने अंदर आत्मसात करेंगे। आज से सैकडों वर्ष पूर्व जब मनुष्य के पास मनोरंजन के साधन टेलीविजन, रेडियो, मोबाइल, सिनेमाघर आदि नही थे-जब मनुष्य जीवन कार्य करते-करते निराशा के अंधकार में डूब जाता था,तब हमारे पर्व-उत्सव,त्यौहार ही जीवन में आशा के नवाचार की ज्योति संचार करते थे। वर्तमान दौर में आज मनोरंजन के अत्यधिक साधन उपलब्ध है, फिर भी लाखों-हजारों वर्षो से चले आ रहे हमारे पर्वो में कभी भी उल्लास की कमी दिखाई नहीं दी। वर्तमान युवा पीढ़ी और समाज हर पर्व को आज दुगने उत्साह-उमंग के साथ मनाते दिखाई देते है। दुनिया का एक मात्र देश भारत ही है,जहां सबसे अधिक त्यौहार मनाए जाते हैं।

वर्षभर की अमावस में कार्तिक माह की अमावस अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। हिंदू सभ्यता, संस्कृति और धर्म के सबसे बड़े त्योहारों में से एक दीपावली का पर्व इसी दिन मनाया जाता है, जो प्रतीक है, अंधकार पर प्रकाश की विजय का। अंधेरे का अपना महत्व है, और उजाले का अपना। जरूरी है, जीवन में प्रकाश के लिए रात्रि का अंधकार। और यह भी जरूरी है, उस अंधकार से निकलकर **अपने भीतर का दीप जलाए..!** जिस प्रकार अज्ञानता

को ज्ञान के दीप से, कुबुद्धि को सद्बुद्धि के प्रकाश से, कठोरता को सरलता के उजाले से, अवगुणों को सद्गुणों की रोशनी से, दूर किया जा सकता है अर्थात दीपावली के लिए अमावस्या भी जरूरी है। दीप का अर्थ ही यह है कि हमारा मन प्रकाशित हो उसमें हर तरह से सद्भाव हो। दीपक की सार्थकता तभी साबित होंगी जब हम अपने प्रकाश से दूसरों की जिंदगीयों को रोशन करें और अंधकार में सोये हुए को दीपक की लौ से सही मार्ग बतलाए। दीपावली तमाम बदलाव के बावजूद खुशी के एक नए अवसर होने का एहसास कराती है, जबकि पूरा विश्व पिछले कुछ सालों से कोरोना महामारी की बीमारी से लड़ा था।अनेक देश भुखमरी की कगार पर खड़े, विश्व के अनेक देश अपने आपसी गृहक्लेश से लड़ रहा है। ऐसे

में हमारे भारत देश की संस्कृति और आध्यत्मिक ताकत ही है जो विश्व के दूसरे नंबर की आबादी होने के बावजूद आज हमारा देश स्थिर व प्रगतिशील है, और पूरे उल्लास के साथ अपने देश के अमृत काल के महोत्सव को बना रहा है। कोरोना बीमारी में हमने जो खोया हम उसको दोबारा नहीं ला पाएंगे। हमे सामूहिक प्रयास करना हैं कि प्रकाश का यह पर्व हम सबके लिए मंगलमय हो। पूरा विश्व भाईचारे के साथ इस दीपोत्सव से प्रकाशमय हो। संस्कृत से आए दीपावली शब्द का अर्थ ही है, प्रकाश की श्रंखला, जिससे पूरा जगत जगमगाए।

स्कन्दपुराण के अनुसार दीपावली पर ही भगवान शिव ने शक्ति की उनकी अर्धांगिनी होने की कामना से की गई 21दिनों की तपस्या से प्रभावित होकर अर्द्धनारीश्वर रूप धरा था। हिन्दू समाज मे माता लक्ष्मी धन्यधान्य, कल्याण और सौंदर्य की प्रतिमा मानी जाती है। इनकी प्राप्ति के लिए दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजा अनिवार्य है। यह पर्व हर वर्ष कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। माता लक्ष्मी का आगमन देवताओं व राक्षसों के बीच समुंद्र मंथन के माध्यम से हुआ। वैसे हिन्दू धर्म मे हर एक त्यौहार की अपनी एक कहानी व मान्यता है। अंधकार पर प्रकाश की विजय का पर्व **दीपावली** उत्सव के बारे में कई कहानियॉ प्रचलित है। भगवान राम ने जब माता सीता को रावण का वध कर मुक्त कराया और अयोध्या अपने घर 14 वर्षों के वनवास के बाद विजय होकर लौटें उसकी खुशी के फलस्वरूप अयोध्या वासियों ने दीप जलाकर नगर सजाया था, तब से यह पर्व चला आ रहा है। कहा जाता है कि घर की लक्ष्मी घर आई !

एक और मान्यता के अनुसार वीर बलि नाम का दैत्य राजा था जिसे स्वयं ब्रम्हा ने वर स्वरूप स्वर्ग का राज्याधिकार दे दिया। सभी इंद्र, इंद्राणीयों, देवताओं इत्यादि ने इस बात का विरोध किया तो राजा बलि ने सभी के साथ लक्ष्मी माता को भी बंदी बना लिया। जब इस बात का पता भगवान विष्णु को लगा तब उन्हें बड़ा क्रोध आया भगवान विष्णु अपनी पत्नी एवं सभी देवताओं को मुक्त कराने के लिए वामन अवतार (बौनारूप) लिया। भगवान ने ब्राह्मण के रूप में राजा बलि से भिक्षा में **तीन गज** माँगें अनभिज्ञ राजा बलि ने हँसते हुए कहा कि ठीक है। तीसरे गज के पूर्व ही भगवान ने सभी को मुक्त करा लिया! पहले गज में पृथ्वी, दूसरे गज में आकाश और तीसरे गज के रूप में स्वयं बलि के सर पर पग रखा! इस घटना ने दैत्य राजा बलि का अहंकार का नाश किया। भगवान विष्णु ने फिर भी राजा बलि को रियायत देते हुए कहा कि वह प्रति वर्ष **तीन दिन** अपने साम्राज्य में विचरण करते हुए अपनी जनता के दु:ख-दर्द, दरिद्रता, कष्ट आदि को दूर करने का प्रयास करे। यह तीन दिन है कार्तिक मास धनतेरस,चतुदर्शी और अमावस्या। धनतेरस से भाईदूज तक मनाये जाने वाला पाँच दिनी यह पर्व अपनी पाँचों दिन की अलग-अलग मान्यता बयां करता है।

अंचल भेद समाप्ति

पं.श्याम मनावत 'मानस मर्मज्ञ'

महाराज दशरथ चक्रवर्ती सम्राट हैं और उनके राज्य में राजधानी अयोध्या में कोई समस्या दिखाई नहीं देती है, परन्तु राजधानी से दूरस्थ वनक्षेत्र समस्याओं से घिरा है। वनक्षेत्र की ये समस्याएँ महामुनि विश्वामित्र दारा महाराज दशरथ के ध्यान में लाई जाती हैं। इस घटना का उल्लेख करते हुए गोस्वामीजी लिखते हैं-

विश्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी।।

(महामुनि विश्वामित्र शुभ- पवित्र स्थान देखकर जंगल में निवास करते हैं।)

जह जप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहिं डरहीं।।
देखत जग्य निशाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं।।

(जहाँ वन क्षेत्र में मुनिगण जप, यज्ञ, अनुष्ठान करते हैं वहाँ राक्षस आकर उपद्रव करते हैं और मुनिजन दुख पाते हैं।)

इस घटना का आशय यह है कि उस समय वनों में धर्म साधना करना कठिन हो गया था। राक्षस धार्मिक गतिविधियों का विरोध करते थे। जब तपस्वी एवं समर्थ महापुरुषों को अपना धर्मपालन कठिन हो रहा था तब सामान्य वनवासियों की क्या स्थिति रही होगी, सहज ही समझ में आता है। जब वन में रहने वाले संतों, महात्माओं एवं सामान्य जनों की आस्था संकट में थी, पूजा-पाठ का विरोध हो रहा था, धर्म का पालन करने वाले प्रताड़ित हो रहे थे, ऐसे संकट के समय में प्रभु श्रीराम ही समाधान कारक हो सकते थे। महामुनि विश्वामित्र इसलिए अयोध्या जाकर प्रभु श्रीराम और लक्ष्मण को यज्ञ रक्षा के लिए माँग लेते हैं-

असुर समूह सतावहि मोही। मैं जाचन आयऊ नृप तोही।।
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध में होब सनाथा ।।

महामुनि जब रामजी - लक्ष्मणजी को यज्ञ रक्षा के लिए मांगते हैं तो दशरथ जी व्याकुल हो जाते हैं। वे रामजी को देने से स्पष्ट मना कर देते हैं-

मांगहु भूमि धेनु धन कोसा। सरबस देउँ आजु सहरोसा।।
देह प्रान ते प्रिय कछु नाहीं। सो मुनि देउँ निमिष एक माहीं।।

(हे मुनि! आप पृथ्वी, गौ, धन और खजाना माँग लीजिए, आज मैं हर्ष के साथ अपना सर्वस्व दे दूँगा, देह और प्राण से बढ़कर तो कुछ नहीं है, मैं उसे भी एक पल में दे दूँगा।)

सब सुत प्रिय मोहि प्रान की नाईं। राम देत नहि बनइ गोसाईं।।
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा। कहँ सुंदर सुत परम किसोरा।।

(सब पुत्र मुझे प्राणों के समान प्यारे हैं। उनमें भी आपने श्रीराम को मांगा, रामजी को तो किसी भी प्रकार मुझसे देते नहीं बनता है, कहाँ तो वे राक्षस क्रूर, भयानक और डरावने हैं और कहाँ मेरे बालक सुंदर और किशोर आयु के हैं।) ये बातें जब कुलगुरु ब्रह्मर्षि वशिष्ठ जी ने सुनी तो उन्हें लगा कि महाराज दशरथ पुत्र मोह में पड़ गए हैं। उन्होंने महाराज को समझाया कि अवधेश आपने जो उत्तर विश्वामित्र जी को दिया वह स्वाभाविक एवं प्राकृतिक है। एक पिता अपनी संतानों के सुख और सुरक्षा के बारे में सोचे यह नैसर्गिक है। वैसा ही आपने सोचा है और मुनिराजजी को देने से मना कर दिया, लेकिन जरा सोचें कि विश्वामित्र जी क्या चाहते हैं। वे साधु हैं, संन्यासी हैं, एक ऋषि हैं और एक साधु कभी अपने स्वार्थ की नहीं सोचता है। उसकी चिंता तो संपूर्ण अस्तित्व के लिए होती है। वह प्राणीमात्र की सुरक्षा, सुख और शांति चाहता है। गृहस्थ की चिंता केवल अपने परिवार तक हो सकती है। राजा की चिंता केवल अपने राज्य तक हो सकती है, परन्तु साधु की चिंता तो सेपूर्ण संसार के लिए होती है। इसलिए तो ऋषियों ने गाया है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः - गुरुदेव के विमर्श से महाराज दशरथ श्रीराम-लक्ष्मण को विश्वामित्र जी को सौंप देते हैं। भगवान राम ताड़का, मारीच और सुबाहु को परास्त कर देते हैं। वे यज्ञ को निर्विघ्न पूरा करा देते हैं। वनवासियों को आसुरी शक्ति के संकट से मुक्त करा देते हैं। प्रभु राम का यह योगदान सिद्ध करता है कि राजा और उसके परिजन केवल राजधानी तक ही सीमित नहीं हो सकते हैं, उन्हें दूरस्थ समाज की भी चिंता करना चाहिए। जंगलों में दूर रहने वाले लोगों का जीवन और धर्म सुरक्षित रहे। इसके लिए सदैव सतर्क रहे। वनवासी, गिरिवासी, समाजजन के साथ नगर में रहने वालों का संपर्क बना रहे, संबन्ध बना रहे संवाद बना रहे। भौतिक दूरियाँ कहीं मानसिक दूरियाँ न बन जाएँ। भूमि को दो भागों में बाँटने वाली नदी और खाई कहीं मानवता को न बाँट दे। नदी दो अंचलों की संधि बने। सिंधु पर्वत सरिता स्नेह की संधि बने।

भगवान राम अपनी इस पहली वन यात्रा से यह उदाहरण स्वयं प्रस्तुत करते हैं। राजधानी से चलकर सिद्धाश्रम तक पहुँचने की यह यात्रा नगर और वन के बीच संबंधों का सेतु है। इस सेतु के निर्माता वनवासी गिरिवासी के प्रिय धर्मरक्षक प्रभु श्रीराम को श्रद्धा भरा प्रणाम। इसीलिए महाराज वशिष्ठ रामजी के इसी रूप की वंदना करते हुए कहते हैं- **धर्म सेतु करुनायतनु कस न कहउ अस राम।**
लोग दुखित दिन दुई दरसु देखि लहहु विश्राम।।

दीपावली मनाएँ, स्वदेशी सामान घर लाएँ

डॉ. सोनाली नरगुन्दे

दीपावली भगवान राम द्वारा की गई असत्य पर सत्य की विजय का पर्व है। इस पर्व को हमें अपने तरीके से मनाना होगा, तभी हमारी दीपावली सार्थक और सत्य के साथ दिखाई देगी। सबसे पहले हमें अपने घरों में लगने वाली आवश्यक सामग्री को हम कहाँ से और कैसे लाते हैं, इसे तय करना होगा। आवश्यक है कि हमें कुछ भी सामान खरीदना है तो वह हम ऑनलाइन न मंगवाकर अपने सबसे पड़ौसी दुकानदारों में से किसी से खरीदें। छोटी-छोटी चीजों को जैसे दीपक, बिजली की सीरीज़ किसी मॉल से न लेकर छोटे स्वरोजगार करने वालों से खरीदें। जैसे हमारे यहाँ कुम्हार द्वारा हाथ के बनाए दीपक एक तरफ तो हमें अपने घरों को रोशनी से भरने देते हैं और वहीं दूसरी ओर इनमें हाथ का कौशल भी होता है। हमारे ऐसे दीपक खरीदने से कुम्हार का घर रोशनी से भर जाता है। आजकल लोगों में त्यौहारों के दौरान बाजार से ही सारा सामान खरीदने की आदत किसी आलसी व्यक्ति की तरह लग गई है। चने की दाल घर लाकर चक्की से पिसाने का रिवाज तो मानो आजकल के लोगों के लिए दकियानूसी बात होकर रह गई है। हमारे घरों में चकली का आटा भी पिसवाया जाता है। बात यहाँ सिर्फ चक्की पर आटा या बेसन पिसाने की ही नहीं है। इससे उस चक्की वाले का रोजगार भी तो चल रहा है। स्वच्छता और सुरक्षित पदार्थ मिलने की सत्यता इसमें अधिक है। हर दिन अलग कपड़े पहनने की प्रथा हो गई है। पहले तो कपड़े सिर्फ उत्सव और बड़े पर्वों पर ही दिलवाये जाते थे।

परंतु यही कपड़े जब दर्जी से सिलवाए जाते थे तो उसमें दर्जी के पसीने की महक और आत्मीयता भी हमें मिलती थी। यह आत्मीयता आज हमने खो दी है। हम बड़े मॉल से कपड़े लाते हैं जो पता नहीं कितने लोगों ने पहनकर देखे होते हैं। कोरे कपड़े पहनने का महत्व पूरी दुनिया में हमसे ज्यादा कोई भी नहीं जान सकता। छोटे रीति-रिवाज करने से उस दिन का महत्व ही नहीं स्थापित होता बल्कि अगली पीढ़ी को उसकी जानकारी भी होती है। आम तौर पर लोगों को दीपावली पांच दिनी उत्सव लगता है। पर यह सात दिनी उत्सव है। एकादशी से शुरू होने वाला यह पर्व वसु-बारस पर गौमाता की पूजा के साथ प्रारंभ होता है। धनतेरस पर भगवान धन्वंतरि की पूजा के साथ इसका हमारी समृद्धि के साथ भी संबंध है। रूप चौदस को लगने वाले तेल और उबटन भी इस उत्सव को और अधिक अपनेपन से भर देते हैं। अमावस्या को माता लक्ष्मी के पूजन के साथ अँधेरे को उजाले में बदलने की हमारी परंपरा आने वाली पीढ़ी को जान लेना चाहिए। गोवर्धन पूजा करने का दिन मालवा में धोक पड़वा के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन अपने गौवंश की पूजा और अपने बड़े-बुजुर्गों का आशीर्वाद लेना भी हमारे जीवन की सार्थकता को दर्शाता है। भाई-दूज का दिन तो प्रेम और सुरक्षा का प्रतीक है ही। यह दिन बताता है हमारे परिवारों में आपसी प्रेम के कारण ही जीवन सतत चलता रहता है। उत्सवों में स्वदेशी का आनंद तभी आ सकता है जब हम आडंबर के बिना साधारण और सरल तरीकों से अपना प्रत्येक दिन मनाएँ।

मालवा निमाड में पथ संचलन की परंपरा

नवम्बर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 01 देवउठनी (प्रबोधिनी) ग्यारस
ता. 05 नर्मदा परिक्रमा भेड़ाघाट जबलपुर
ता. 12 काल भैरवाष्टमी
ता. 15 राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस
ता. 22 वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि
ता. 25 गुरू तेगबहादुर शहीदी दिवस

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक राकेश दाँगी फोन नं. 0731-3551341